JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बिहार के माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की उपलब्धियों पर माता-पिता की शिक्षा, शैक्षिक जागरूकता, और पारिवारिक परिवेश के अनुभव का अध्ययन

[1]प्रीति कुमारी, [2]डॉ बिनय कुमार

[1]"शोधार्थी" रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय पलामू झारखण्ड

[2]शोद्य निदेशक रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय पलामू झारखण्ड

सारांश

बिहार के माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की उपलब्धियों पर माता-पिता की शिक्षा, शैक्षिक जागरूकता, और पारिवारिक परिवेश के अनुभव का अध्ययन महत्वपूर्ण है। माता-पिता के शैक्षिक पृष्ठभूमि, उनकी शिक्षा की स्तर, और पारिवारिक परिवेश के साथी प्रभाव छात्राओं की शैक्षिक प्रगति पर सीधे असर डालते हैं। इस अध्ययन से हमें परिवारों के अनुभव छात्राओं की उपलब्धियों पर कैसे प्रभाव डालते हैं, इसे समझने में मदद मिलेगी। इससे शिक्षा नीतियों और कार्यक्रमों को समायोजित करने में भी मदद मिलेगी, ताकि हर छात्र को समर्थित किया जा सके। माता-पिता के सकारात्मक समर्थन, शैक्षिक उत्साह, और शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी से छात्राओं का आत्मविश्वास बढ़ता है। बिहार के माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की उपलब्धियों पर माता-पिता की शिक्षा, शैक्षिक जागरूकता, और पारिवारिक परिवेश के अनुभव का अध्ययन एक गहरा सम्बन्ध है। यह अध्ययन छात्रों की शैक्षिक सफलता पर प्रभाव डालने वाले कई कारकों को विश्लेषित करता है। पहला महत्वपूर्ण कारक है माता-पिता का सकारात्मक समर्थन। उनका शैक्षिक उत्साह और प्रेरणा छात्रों को अधिक उत्साही और प्रतिस्पर्धी बनाता है। उनका सहयोग और मार्गदर्शन छात्रों के लिए महत्वपूर्ण होता है ताकि वे अपने लक्ष्यों की दिशा में अग्रसर हो सकें। दूसरा, पारिवारिक परिवेश का महत्वपूर्ण योगदान होता है। वहाँ के साथी, परिवार के माहौल, और शैक्षिक मूल्यों की महत्वपूर्णता छात्रों की शिक्षा में होती है। एक सकारात्मक और समर्थक परिवार में पलने वाले छात्र अक्सर शैक्षिक दृष्टि से अधिक सफल होते हैं। तृतीय, शैक्षिक जागरूकता का महत्व बड़ा होता है। जब परिवार शिक्षा को महत्व देता है और छात्रों को शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक करता है, तो वे अधिक प्रेरित होते हैं और अधिक उत्साही बनते हैं। इस अध्ययन के आधार पर, शिक्षा नीतियों को परिवर्तित करने और शैक्षिक योजनाओं को विकसित करने की आवश्यकता है ताकि माता-पिता की शिक्षा, पारिवारिक परिवेश, और शैक्षिक जागरूकता के महत्व को समझा जा सके और छात्रों को शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाने में मदद की जा सके।

महत्वपूर्ण शब्द: शिक्षा नीति, माध्यमिक शिक्षा, शैक्षिक जागरूकता, पारिवारिक परिवेश, सकारात्मक समर्थन।

प्रस्तावना

शिक्षा एक समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण है, और छात्रों की उपलब्धियों का मूल्यांकन करने के लिए उनके पारिवारिक परिवेश का महत्वपूर्ण अध्ययन किया जाना चाहिए। बिहार के माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की उपलब्धियों पर माता-पिता की शिक्षा, शैक्षिक जागरूकता, और पारिवारिक परिवेश के अनुभव का अध्ययन इस रिसर्च पेपर का उद्देश्य यही है कि इन प्रमुख कारकों के मध्यम से बिहार के माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की उपलब्धियों पर विस्तृत अध्ययन किया जाए।

बिहार में माध्यमिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जहां छात्रों की शिक्षा, उनकी उपलब्धियों और सफलताओं का परिणाम परिवारिक परिवेश, माता-पिता की भूमिका और शैक्षिक जागरूकता के अनुभवों पर भी निर्भर करता है।

भारत में माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा प्रणाली को संदर्भित करती है जो प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच का अंतर कम करती है। "माध्यमिक" शब्द प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच का मध्यस्तर को संदर्भित करता है। प्राचीन और मध्यकालीन भारत में शिक्षा को रिक्तियों में दो भागों में विभाजित किया गया था: प्राथमिक और उच्च शिक्षा। आधुनिक माध्यमिक शिक्षा की धारा को उपक्रम काल में प्रस्तुत किया गया, विशेषकर ईसाई मिशनरियों द्वारा। शिक्षा के औपचारिक संरचना की शुरुआत 1854 के वुड्स डिस्पैच के साथ हुई, जो भारत में आधुनिक माध्यमिक शिक्षा के ढांचे को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रलेखन ने माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य और पाठ्यक्रम को रूपांतरित किया, भारत में संगठित शिक्षा की औपचारिक शुरुआत का संकेत दिया। 1882 में, ब्रिटिश सरकार ने भारतीय शिक्षा आयोग की स्थापना की, जिसने माध्यमिक शिक्षा को दो भागों में विभाजित करने का प्रस्ताव दिया –

(1) साहित्यिक शिक्षा।

(2) व्यावसायिक शिक्षा।

संबंधित साहित्य के स्रोत: शोध क्षेत्र में संबंधित साहित्य का अध्ययन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। संबंधित साहित्य के समीक्षात्मक अध्ययन से शोधकर्ता को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समस्याओं का विश्लेषण करने में मदद मिलती है। जे.एम.एल. के अनुसार, "किसी भी शोध प्रबंध को तब तक उपयुक्त नहीं माना जाता है जब तक कि उस प्रबंध से संबंधित साहित्य उपलब्ध नहीं होता है।" संदर्भ साहित्य का ज्ञान शोधकर्ता को नई और विरोधाभासी उपलब्धियों के विषय में जानकारी प्राप्त कराता है, जिससे वह अपने क्षेत्र में अध्ययन करता रहता है।

समायोजन: मस्तिष्क जीवन की घुड़ी होती है। यह वातावरण से प्रभावित होकर जैसा निराशा, दुख, हर्ष और आनंद महसूस करता है, उसका प्रभाव सीधे शरीर पर पड़ता है। यह अवस्था छात्रों के विकास के पहले और मुख्य चरण को दर्शाती है, इसलिए मनोवैज्ञानिक स्टेनले हॉल ने इसे "आंधी तुफान का काल" भी कहा है। इस अवस्था में छात्रों को कुछ करने की उत्कृष्टता होती है, और वे अपनी शक्तियों को प्रदर्शित करना चाहते हैं और नए अद्भुत आदतें विकसित करने लगते हैं। यदि माता-पिता इस अवस्था में छात्रों को उचित समय पर ध्यान नहीं देते हैं, तो वह छात्र अपने लक्ष्यों से भटक सकते हैं और गलत रास्ते पर चल सकते हैं, जिससे समाज और राष्ट्र को प्रगति के मार्ग में अवरुद्ध किया जाता है।

शैक्षिक शोध की आवश्यकता: - अभिभावक छात्र की वर्तमान दशा निम्न स्तर पर है। यह सत्य है कि आज अभिभावक सामान्यतः अपने बालक से असन्तुष्ट हैं, साथ ही बालक भी अपने अभिभावक से असन्तुष्ट हैं। यद्यपि कुछ वर्ष पहले अभिभावक की आर्थिक स्थिति वास्तव में खराब थी, तब भी उनका व्यवहार ऐसा नहीं था। वे छात्रों के भविष्य और संस्कारों को प्राथमिकता देते और गरिमामय छवि बनाए रखते थे। वे समाज के सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों में से एक थे। आज उनकी आर्थिक स्थिति भी आकर्षक हो गई है, लेकिन वे अन्य कामों में ज्यादा लिप्त रहते हैं। जैसे-जैसे सुविधाएँ बढ़ती जा रही हैं, वैसे-वैसे तृष्णा का स्तर भी बढ़ रहा है। आज के अभिभावक बेचैन हैं और पुराने समय के अभिभावक से अलग हैं। इस वर्ग के लोग परीक्षा परिणामों को हेर-फेर करवाने, दलाली करने और राजनीतिक दलों से संबंध स्थापित करके लाभ कमाने में हिस्सा लेते हैं। ऐसे कार्यों को वे धन कमाने का एक अतिरिक्त साधन मानते हैं। इस क्षेत्र में आज शोध की बहुत आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध विषय का शीर्षक है "बिहार के माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की उपलब्धियों पर माता-पिता की शिक्षा, शैक्षिक जागरूकता, और पारिवारिक परिवेश के अनुभव का अध्ययन।"

अध्ययन उद्देश्य : किसी भी शोधकर्ता का कार्य उसके उद्देश्यों में समाहित और निर्देशित होता है। वास्तव में, प्रस्तुत अध्ययन के प्राप्य उद्देश्य खगड़िया जिला के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों के संदर्भ में शोधकर्ता द्वारा निम्न उद्देश्य लिए गए हैं:

माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों पर माता-पिता की शिक्षा संबंधों का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना इस अध्ययन संबंधित परिकल्पना का निर्माण शोधकर्ता द्वारा शून्य परिकल्पना के रूप में किया गया है। सामान्यतः, जिन क्षेत्रों में अध्ययन का अभाव होता है, वहाँ शून्य परिकल्पना की जाती है। इसे सांख्यिकीय परिकल्पना भी कहते हैं।

माता-पिता की शिक्षा और छात्रों की उपलब्धियाँ

माता-पिता की शिक्षा छात्रों की उपलब्धियों पर सीधा प्रभाव डालती है। जब माता-पिता छात्रों के शैक्षिक प्रयासों को प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें निरंतर प्रेरित करते हैं। माता-पिता अपने बच्चों को शिक्षा के महत्व को समझाते हैं और उनकी पढ़ाई में सहायता करते हैं, तो छात्रों की प्रेरणा और उनकी उपलब्धियाँ बढ़ती हैं। माता-पिता के सकारात्मक समर्थन से छात्र अधिक संवेदनशील, सक्रिय और सफल होते हैं। अगर माता-पिता शैक्षिक दृष्टिकोण से सजग और सहायक हैं, तो छात्र अधिक सफलता की ओर बढ़ते हैं। माता-पिता की शिक्षा छात्रों की उपलब्धियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है, क्योंकि वे छात्रों के प्रमोटिंग और सहायक होते हैं। एक सक्षम और सहायक माता-पिता से प्राप्त शिक्षा छात्रों को निरंतर प्रेरित करती है और उन्हें सही दिशा में ले जाती है। माता-पिता अपने बच्चों को उनके अध्ययन में सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। वे उनके शैक्षिक लक्ष्यों को समझते हैं और उन्हें उनके प्रत्येक कदम पर समर्थन करते हैं।

अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें अधिक सफल बनने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका समर्थन छात्रों की आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उन्हें अपनी उपलब्धियों को प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित करता है। माता-पिता अपने बच्चों को शिक्षा के महत्व को समझाते हैं और उन्हें शिक्षा के लाभों का उचित समझावन देते हैं। इससे छात्रों की शिक्षा में अधिक समर्थन मिलता है और वे अधिक प्रेरित होते हैं। माता-पिता अपने बच्चों को संस्कृति, मानवीय मूल्यों और नैतिकता का महत्व सिखाते हैं। इससे छात्रों का व्यक्तित्व और विचारधारा विकसित होता है। अपने बच्चों को अनुशासन और स्वाध्याय की महत्वपूर्णता को समझाते हैं। यह उन्हें अधिक सफल और स्वावलंबी बनाता है। इस प्रकार, माता-पिता की शिक्षा छात्रों की उपलब्धियों को प्रभावित करती है, जो उन्हें अधिक सफल और समृद्ध बनाती है।

शैक्षिक जागरूकता और छात्रों की उपलब्धियाँ

शैक्षिक जागरूकता भी छात्रों की उपलब्धियों पर प्रभाव डालती है। जब समाज में शिक्षा के महत्व को समझाया जाता है और छात्रों को शिक्षा के माध्यम से अपनी स्थिति में सुधार करने का मार्गदर्शन किया जाता है, तो छात्रों की प्रेरणा बढ़ती है और वे अधिक सफलता प्राप्त करते हैं। शैक्षिक जागरूकता छात्रों की उपलब्धियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है, क्योंकि यह उन्हें शिक्षा के महत्व को समझने और उसे प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। जब छात्रों को शिक्षा के महत्व का ज्ञान होता है और उन्हें शिक्षा के लाभों का अहसास होता है, तो वे अधिक प्रेरित होते हैं और अधिक सफलता प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। शैक्षिक जागरूकता छात्रों को शिक्षा के महत्व को समझने में मदद करती है। जब वे जानते हैं कि शिक्षा उनके भविष्य के लिए कितनी महत्वपूर्ण है, तो वे अधिक उत्साहित होते हैं और अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बनते हैं। शैक्षिक जागरूकता छात्रों को शिक्षा के लिए उपलब्ध संसाधनों का सही उपयोग करने में मदद करती है। वे लाभांवित होते हैं और विभिन्न शैक्षिक संसाधनों का उपयोग करके अधिक समृद्ध होते हैं। शैक्षिक जागरूकता छात्रों को स्वतंत्रता की महत्वता को

समझाती है और उन्हें स्वतंत्रता के लिए प्रोत्साहित करती है। वे अपने अध्ययन में अधिक सक्रिय होते हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील बनते हैं। छात्रों को सामाजिक प्रतिस्पर्धा के महत्व को समझने में शैक्षिक जागरूकता मदद करती है। वे अधिक उत्साहित होते हैं और अपने प्रतियोगितात्मक दृष्टिकोण को बढ़ाते हैं। छात्रों को समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरित करती है। वे शिक्षा के माध्यम से समाज में बेहतरीन योगदान करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं और समाज के विकास में सहायक होते हैं। इस प्रकार, शैक्षिक जागरूकता छात्रों की उपलब्धियों को प्रभावित करके उन्हें अधिक सफल और समृद्ध बनाती है।

पारिवारिक परिवेश और छात्रों की उपलब्धियाँ:

पारिवारिक परिवेश भी छात्रों की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब पारिवारिक माहौल संरचित, स्नेहपूर्ण, और सकारात्मक होता है, तो छात्रों की स्वाभाविक प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और उन्हें अधिक उत्साहित किया जाता है। परिवार छात्रों के लिए समर्थन और प्रेरणा प्रदान करता है। जब परिवार बच्चों के सपनों को समझता है और उन्हें उनके लक्ष्यों की ओर प्रेरित करता है, तो छात्र अधिक उत्साहित होते हैं और अधिक उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होते हैं। परिवार स्थिरता और सुरक्षा की भावना प्रदान करता है, जो छात्रों के विकास के लिए आवश्यक है। एक सही संरचना और सम्मानजनक वातावरण में बड़े होने से छात्रों की स्वाभाविक रूप से समझदारी, सहयोग और सामाजिक कौशल विकसित होते हैं। परिवार में सभी सदस्यों के बीच सजीव संबंध और स्नेह का महत्व होता है। यह छात्रों को आत्मविश्वास, स्थिरता और समझदारी देता है, जो उन्हें उनके अध्ययन में सहायक होता है। परिवार से मिलने वाले सामूहिक अनुप्रयोग और समाजिक क्रियाएं छात्रों के सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तित्विक विकास को प्रोत्साहित करती हैं। इसके माध्यम से, वे नए विचारों को सीखते हैं और सामाजिक सम्पर्क को बढ़ाते हैं। एक संरक्षित परिवारी वातावरण में, छात्र सुरक्षित महसूस करते हैं और उन्हें संवेदनशीलता, उत्साह और सामर्थ्य की भावना होती है। यह उन्हें स्वतंत्रता के लिए उत्साहित करता है और उन्हें नए अनुभवों का सामना करने की क्षमता प्रदान करता है। इन सभी पारिवारिक परिवेश के पहलुओं के साथ, छात्रों की उपलब्धियों पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है, जो उन्हें समृद्ध, सक्रिय और सफल बनाता है।

निष्कर्ष

बिहार के माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की उपलब्धियों पर माता-पिता की शिक्षा, शैक्षिक जागरूकता, और पारिवारिक परिवेश के अनुभव का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। यह स्तर से पारिवारिक और सामाजिक संरचना को समझने में मदद कर सकता है और शिक्षा नीतियों और कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावी बना सकता है। किसी भी शोध को उसके लक्ष्यों को ध्यान में रखकर और उसकी तार्किकता की परीक्षा करने के लिए परिकल्पनाओं का निर्धारण किया जाता है। साथ ही, समस्या से संबंधित सुझाव और भविष्य में समस्या से संबंधित संभावित सुझावों पर चर्चा की गई है, जिन्हें अपनाकर या लागू करके छात्रों को अच्छा वातावरण प्रस्तुत किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथसूची

1) रॉय, क. 2022: "ग्रामीण और शहरी शिक्षा: एक तुलनात्मक अध्ययन". ग्रामीण शिक्षा पत्रिका, 29(5), 45-67.
2) गुप्ता, ए. 2021: "पारिवारिक परिवेश और शैक्षिक प्रगति". भारतीय सामाजिक अध्ययन, 37(3), 78-99.
3) शर्मा, आर. (2020). "शैक्षिक जागरूकता और पारिवारिक योगदान". शिक्षा और समाज, 12(1), 89-102.

4) सिंह, पी. 2019: "माता-पिता की शिक्षा और बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियाँ". भारतीय शिक्षा जर्नल, 50(4), 234-256.
5) कुमार, एस. 2018: "बिहार में शिक्षा का सामाजिक प्रभाव". शैक्षणिक समीक्षा, 45(2), 123-145.
6) पाण्डे रामशकल 2018: विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2, अष्ठम संस्करण
7) सिंह, अरूण कुमार 2017: मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, नई दिल्ली
8) लाल बिहारी, 2016: रमन भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं आरलाल बुक डिपो, मेरठ पृ. 617-607
9) लाल बिहारी, 2015-16: रमन शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त रस्तौगी पब्लिकेशन, मेरठ
10) बासु, सारा 2011: ए स्टडी ऑफ मेण्टल हेल्थ एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ सैकेण्डरी स्कूल टीचर्स भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, अंक 30 पृ.19-25
11) बालाचन्द्रन एवं सैम 2007: पत्रिका, अंक 26 पृ० 26-31. "लाइफ सेटिसफेक्शन एण्ड एलीयेशन ऑफ एल्डरली मेल एण्ड फीमेल भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, अंक 30पृ.26-31
12) शर्मा पं. श्रीराम 2000: अपरिमित संभावनाओं का आधार मानवी व्यक्तित्व, प्रकाषक अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा,
13) शर्मा, पं. श्रीराम 2000: भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व, प्रकाशक अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा,
14) कुमार, आनन्द गारेट, 1999: एच.ई. डेस्क्रिप्ट स्टाटिटिस्कस, प्रेन्टिस हाल इंडिया,
15) Sinha P. 1982: An Evaluative study to teacher education in Bihar. Ph.D. Edu. Patna. University.
16) Adaval S.B. 1976:- An Investigation in to the qualities teacher under training Ph.D. (Edu.) Allahabad.
17) राय पारसनाथ तथा भटनागर 1973: अनुसंन्धान परिचय लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, प्रकाशन आगरा, 3.